कृति	:	मिलिए जैनाचार्यों से
		भाग – 1,2,3, संयुक्त
कृतिकार	:	मुनि प्रज्ञा सागर
प्रकाशक	:	जैन धर्म संवर्धन संस्थान, अहमदाबाद
प्राप्ति स्थल	:	जैन धर्म संवर्धन संस्थान द्वारा प्रोफेसर डा. शैलेष भाई. ए. शाह 1/1, गोकुल अपार्टमेंट, सोला हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, अहमदाबाद–380063 फोन : 079–27438207
मूल्य	:	50/– रूपये मात्र

समय की तूली से लिखा गया मानवीय अमानवीय लोगों का चित्र इतिहास कहलाता है और इतिहास जिये गये अनुभवों का निचोड़ है। इतिहास के पृष्ठों पर अंकित होता है अतीत का हिसाब–किताब। इतिहास से ही हमें ज्ञात होता है कि इस पृथ्वी पर अनेकोनेक संत पुरूष हुए है, जिन्होंने गुमराह मानव जाति को मार्गदर्शन/दिशा दर्शन दिया है। उन्हीं साधु–संतों, तीर्थकर भगवन्तों की मौन–करूणा के सहारे ही आज हम बेरोक–टोंक उबड़ खाबड़ विषमताओं से परिपूर्ण स्थिति में अबाध गति से अहर्निश चह रहे हैं, परन्तु दुर्भाग्य है हमारा कि हमारे पास उन महानतम दिगम्बर जैनाचार्यों का न कोई जीवन वृत है, न कोई जीवन चित्र है।

भगवान महावीर स्वामी के बाद हजारों सन्त–महानीषी जैनाचार्य हुए हैं। जिन्होंने धर्म–राष्ट्र व समाज के उत्थान के लिए अनुकरणीय योगदान दिया है, परन्तु अफसोस इस बात का है कि आज तक हम उनके जीवन चरित्र को पूर्णरूपेण संकलित नहीं कर पाये हैं।

मैंने इन सभी कृतियों के सहयोग से यत्र–तत्र बिखरे हुए जैनाचार्यों के जीवन चरित्र को बटोरने का प्रयास किया है। जिसमें प्रमाणिकता, अविरोधकता का पूरा–पूरा

ख्याल रखा गया है। फिर भी मेरे द्वारा लिखित कृति मिलिये जैनाचार्यों से मैं त्रुटि होना स्वाभाविक है।

अपनी इस लघुतम कृति को मैं समस्त दिगम्बर जैनाचार्यों को समर्पित करते हुए उनके श्री चरणों में बारम्बार कोटि–कोटि नमन करता है।

....